VOLUME - VII, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

७. हिंदी बाल कहानी – साहित्य में लोककथाएँ

डॉ. अमोल पालकर
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड ।

कहानियाँ कई प्रकार की होती हैं जिनमें लोककथाएँ हैं। संसार की ऐसी कोई भाषा नहीं होगी जिनमें कहानियाँ न मिलती हो। बाल कहानी- साहित्य को देखा जाएँ तो उसमें भी व्यापक तौर पर लोककथाएँ तथा पौराणिक कथाएँ दिखाई देती हैं , जो बच्चों को अपनी संस्कृति, आदर्श तथा परंपराओं का ज्ञान देते हुए संस्कारित करती हैं।

हिंदी बाल कहानी साहित्य में लोककथाएँ

लोक कथाओं की परंपरा बहुत ही प्राचीन तथा व्यापक है। यह कथाएँ हम बचपन से दादी, नानी की जुबानी सुनते आ रहे हैं। यह कहानियाँ सिर्फ कहानियाँ न होकर जीवन का सार हैं, पूर्वजों के अनुभव है जो अगली पिढ़ी को आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हुई है। जिसका आधार पाकर हम जीवनरूपी नाँव को दिशा प्रदान कर निश्चित ध्येय की प्राप्ति कर सकते हैं। अर्थात् लोककथाओं से जीवन जीने की कला सीखी जा सकती है। यह लोककथाएँ अब सिर्फ दादी-नानी तक ही सीमित नहीं रही तो उनका पुस्तकों में प्रकाशन हो रहा है। लोककथाओं के सहारे व्यक्ति जीवन में आयी कठिनाईओं को दूर कर निश्चित ध्येय प्राप्त कर सकते हैं। लोककथाएँ बच्चों को आगे बढ़ने, अनुभव प्रदान करने के साथ ही बच्चों को सही ज्ञान देती हैं और मनोरंजन भी करती है।

लोककथाएँ बच्चों को हर तरह से अनुभव रुपी साचे में डालकर संस्कारित करती हैं। चाहे वह सुख-दु:ख की परिस्थिति हो या कोई और। वे निडरता तथा धैर्य से हर परिस्थिति का सामना करने की शिक्षा देती हैं। यहीं सीख प्रल्हाद रामशरण की 'राजा प्रसेनजित की चतुराई' कहानी से मिलती है। कहानी में राजा प्रसेनजित अपनी चतुराई से तपस्वी महाराज के दीनार का कलश खोज निकालते हैं। राजा के इस चतुराई पूर्ण न्याय से सभी नगरवासी प्रसन्न होकर उनकी प्रशंसा करते हैं। कहानी के संवाद अत्यंत सारगर्भित तथा पात्रों को न्याय देनेवाले हैं। जैसे - नगर के सेठ तपस्वी को समझाते हैं- ``तपस्वी देवता, धन के खो जाने से मृत्यू का वरण करना अच्छा नहीं है। धन-दौलत तो धूप-छाँव के समान है, अत: इसके लिए इतना शोक करना व्यर्थ है।``[1]

इस वक्तव्य से स्पष्ट होता है कि चाहे परिस्थिति कितनी भी बिकट क्यों न हो परंतु धैर्य खोना नहीं चाहिए क्योंकि दुख के बाद सुख और सुख के बाद दुख यह फेरा चलता ही रहता है साथ ही धन-संपत्ति का लोभ करना नहीं चाहिए क्योंकि पैसा आज है तो कल नहीं परंतु इन्सानियत और धैर्य हमेशा मनुष्य के साथ रहते है तो इन्हें खोना नहीं चाहिए।

हिंदी लोककथाओं का क्षेत्र व्यापक होने के साथ साथ उसकी उपयोगिता भी उतनी ही बड़ी है। यह कहानियाँ बच्चों को एक अच्छा नागरिक बनाने की सीख देती है। खेल-खेल में उन्हें कहानी के माध्यम से अहिंसा का पाठ पढ़ाती है जो मनुष्य